Downloaded from www.studiestoday.com

अपठित काव्यांश

प्रश्न 1. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प छाँटकर लिखिए** अंक 5

युग-युग तक चलती रहे कठोर कहानी
'रघुकुल में थी एक अभागिन रानी'
'धिक्कार' उसे था महास्वार्थ ने घेरा
''सौ बार धन्य वह एक लाल की माई
जिस जननी ने है जना भरत-सा भाई।''
पागल-सी प्रभु के साथ सभा चिल्लाई,
''सौ बार धन्य वह एक लाल की माई''

1. **रघुकुल में यह अभागिन रानी कौन थी ?**
(क) कौशल्या (ख) सीता (ग) कैकयी (घ) गांधारी

2. **इस काव्यांश में रानी का कौन-सा भाव प्रकट हो रहा है**
(क) प्रायश्चित (ख) सहानुभूति (ग) क्रोध (घ) गर्व

3. **''सौ बार धन्य वह एक लाल की माई'' किसका कथन हो सकता है**
(क) भरत (ख) सभा (ग) राम (घ) मुनिगण

4. **'पागल-सी सभा' में कौन सा अलंकार प्रयुक्त हुआ है**
(क) श्लेष (ख) उत्प्रेक्षा (ग) अनुप्रास (घ) उपमा

5. **अच्छे भाई की उपमा किससे दी जाती है ?**
(क) राम (ख) भरत (ग) सभा (घ) लाल की माई

प्रश्न 2. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प छाँटकर लिखिए** अंक 5

प्राइवेट बस का ड्राइवर है तो क्या हुआ ?
सात साल की बच्ची का पिता तो है ।
सामने गीयर से ऊपर
हुक से लटका रखी हैं
काँच की चार चूडियाँ गुलाबी ।
बस की रफ्तार के मुताबिक
हिलती रहती हैं,
झुक कर मैंने पूछ लिया,
खा गया मानों झटका ।
अधेड़ उम्र का मुच्छड़ रौबीला चेहरा
आहिस्ते से बोला : हाँ सा 'ब'
लाख कहता हूँ, नहीं मानती है मुनिया ।
टाँगे हुए हैं कई दिनों से
अपनी अमानत यहाँ अब्बा की नज़रों के सामने ।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

1. **'ड्राइवर को सात साल की बच्ची का पिता तो है' क्यों कहा गया है?**
   (क) **ड्राइवर** भी पिता हो सकता है
   (ख) **ड्राइवर** का व्यवहार कठोर होता है
   (ग) बस के **ड्राइवर** भी संवेदनशील होते हैं
   (घ) **ड्राइवर** को पिता नहीं होना चाहिए ।
2. **बस में गीयर के हुक में काँच की चूडियाँ किसने लटका रखी हैं?**
   (क) **ड्राइवर** ने (ख)मुनिया ने (ग) लेखक ने (घ) बस वाले ने
3. **बस में चूडियाँ टाँगने से बच्ची का क्या उर्श्यि है?**
   (क) चूडियाँ खनकती रहें
   (ख) सजाने के लिए
   (ग) अब्बा की नजरों के सामने रहें
   (घ) चूडियाँ हिलती रहें
4. **'खा गया मानो झटका' में कौन सा अलंकार निहित है?**
   (क) उत्प्रेक्षा
   (ख) उपमा
   (ग) अनुप्रास
   (घ) यमक
5. **चूडियों के विषय में ड्राइवर से किसने पूछा**
   (क)बस की सवारी ने
   (ख) लेखक ने
   (ग) **ड्राइवर** की बच्ची ने
   (घ) स्वयं **ड्राइवर** ने

प्रश्न 3. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उनार के सही विकल्प छाँटकर लिखिए अंक 5

आँधियों ने गोद में हमको खिलाया है न भूलो;
कंटकों ने सिर हमें सादर झुकाया है न भूलो;
सिंधु का मथ कर कलेजा हम सुधा भी शोध लाए;
औ हमारे तेज से सूरज लजाया है न भूलो ।

वे हमीं तो हैं कि इक हुँकार से यह भूमि काँपी,
वे हमीं तो हैं, जिन्होंने तीन डग में सृष्टि नापी,
और वे भी हम, कि जिनकी सभ्यता के विजयरथ
धूल उड़कर छोड़ आई छाप अपनी विश्वव्यापी ।

वक्र हो आई भृकुटि तो ये अचल नगराज डोले,
दश दशाओं के सबल दिक्पाल ये गजराज डोले,
डोल उट्ठी है धरा, अंबर, भुवन, नक्षत्र-मंडल,
ढीठ अत्याचारियों के अंहकारी ताज डोले ।

सुयश की प्रस्तर-शिला पर चिह्न गहरे हैं हमारे,
ज्ञान-शिखरों पर धवल ीवज-चिह्न लहरे हैं हमारे,

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

वेग जिनका यों कि जैसे काल की अंगड़ाइयाँ हों,
उन तरंगों में निडर जलयान ठहरे हैं हमारे ।
लास्य भी हमने किए हैं और तांडव भी किए हैं,
वंश मीरा और शिव के, विष पिया है और जिए हैं,
दूध माँ का, या कि चंदन या कि केसर जो समझ लो
यह हमारे देश की रज है, कि हम इसके लिए हैं।

(क) **'हम' शब्द का प्रयोग किया गया है**
(*प*) कवि के लिए
(*पप*) मानव मात्र के लिए
(*पपप*) भारत वासियों के लिए
(*पअ*) संपूर्ण विश्व के लिए

(ख) **किसकी छाप विश्व व्यापी है?**
(*प*) पाश्चात्य सभ्यता की
(*पप*) मिश्र सभ्यता की
(*पपप*) माया सभ्यता की
(*पअ*) भारतीय सभ्यता की

(ग) **पर्वत से लेकर क्रूर शासक तक कब डोलने लगते हैं ?**
(*प*) भूकंप आने पर
(*पप*) भारतवासियों के क्रोध आने पर
(*पपप*) ज्वालामुखी फटने पर
(*पअ*) प्रलय आने पर

(घ) **भारतवासियों के स्वभाव की विशिष्टता है**
(*प*) मानव मात्र के प्रति संवेदना
(*पप*) अपनी शक्ति के प्रति अहंकार
(*पपप*) सुख-सुविधाओं के लिए लालसा
(*पअ*) सृष्टि के विनाश की चाह

(ट) **'तांडव' और 'विष' का उल्लेख किसके संदर्भ में किया गया है ?**
(*प*) मीरा
(*पप*) :ष्ण
(*पपप*) पार्वती
(*पअ*) शिव

प्रश्न 4. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उनार के सही विकल्प छाँटकर लिखिए** अंक 5

बहुत बड़ी बरबादी की
इस धरती पर आबादी की
यूँ फसल उगाते जाओगे
अब वह दिन ज्यादा दूर नहीं
जब सिर धुन धुन पछताओगे ।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

तुम कितने जंगल तोड़ोगे,
कितने वृक्षों को काटोगे,
इस शस्य श्यामला धरती को
कितने टुकड़ों में बाँटोगे ?
है किंचित तुमको सबर नहीं
क्या ये भी तुमको खबर नहीं ?
ये धरती तो बस धरती है,
ये धरती कोई रबर नहीं,
बोते हो पेड़ बबूलों के
फिर आम कहाँ से खाओगे ?

वह बढ़ती जाती बदहाली,
खो गई सुबह की तरुणाई,
खो गई शाम की वह लाली,
बिन वर्षा के इस धरती पर,
तुम कैसे अन्न उगाओगे ?

यह गंगा भी अब मैली है,
जल की हर बूँद विषैली है,
इस दूषित जल के पीने से,
नित नई बीमारी फैली है।

(क) **मनुष्य धरती पर फ़सल उगा रहा है**
(*प*) घृणा की फ़सल
(*पप*) प्रेम की फ़सल
(*पपप*) बढ़ती जनसंख्या की फसल
(*पअ*) आम की फसल

(ख) **'शस्य श्यामला धरा' से अभिप्राय है**
(*प*) काली सूखी धरा
(*पप*) हरी-भरी उपजाऊ धरा
(*पपप*) बंजर धरा
(*पअ*) सूखी फटी धरा

(ग) **गंगा का जल कैसा हो गया है ?**
(*प*) निर्मल व पवित्र
(*पप*) अथाह
(*पपप*) सूख गया है
(*पअ*) मैला व प्रदूषित

(घ) **काव्यांश संदेश दे रहा है**
(i) पर्यावरण को बचाने का
(ii) वृक्षारोपण का

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

(iii) जनसंख्या वृद्धि रोकने का

(iv) उपर्युक्त सभी

(ट) **इस काव्यांश का उपयुक्त शीर्षक होगा**

(प) बरबादी

(पप) शस्य श्यामला धरा

(पपप) बबूल की फसल

(v) उपर्युक्त सभी

प्रश्न 5. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उनार के सही विकल्प छाँटकर लिखिए** अंक 5

नहीं, ये मेरे देश की आँखें नहीं हैं
पुते गालों के ऊपर
नकली भवों के नीचे
छाया प्यार के छलावे बिछाती
मुकुर से उठाई हुई
मुसकान मुसकराती
ये आँखें
नहीं, ये मेरे देश की नहीं हैं.....
तनाव से झुर्रियाँ पड़ी कोरों की दरार से
शरारे छोड़ती घृणा से सिकुड़ी पुतलियाँ-
नहीं, वे मेरे देश की आँखें नहीं हैं.....
वन डालियों के बीच से
चौंकी अनपहचानी
कभी झाँकती हैं वे आँखें,
मेरे देश की आँखें,
खेतों के पार
मेड़ की लीक धारे
क्षिति-रेखा खीजती
सूनी कभी ताकती हैं
वे आँखें
डलिया हाथ से छोड़ा
और उड़ी धूल के बादल के
बीच में से झलमलाते
जाड़ों की अमावस में से
मैले चाँद-चेहरे सकुचाते
में टँकी थकी पलकें
उठाईद्व
और कितने काल-सागरों के पार तैर आई मेरे देश की आँखें.....

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

(क) **'पुते गालों एवं नकली भवों' से कवि का क्या आशय है।**

(*प*) तरक्की एवं बनावटीपन

(*पप*) आधुनिकता एवं विकास

(*पपप*) छलावा एवं बनावटीपन

(*पअ*) छलावा एवं सूनापन

(ख) **कवि किस प्रकार की आँखों को अपने देश की आँखें नहीं मानता ?**

(*प*) शर्माती एवं सकुचाती, प्यार का छलावा करती आँखों को

(*पप*) तनाव एवं घृणा से भरी, प्यार का इज़हार करती आँखों को

(*पपप*) ग्रामीण जन-जीवन की सहजता के भरी आँखों को

(*पअ*) तनाव एवं घृणा से भरी, प्यार का छलावा करती आँखों को

(ग) **कवि किन आँखों को अपने देश की आँखें मानता है ?**

(*प*) जिनमें तनाव एवं घृणा भरी हो

(*पप*) जिनमे ग्रामीण जन-जीवन की सहजता हो

(*पपप*) जिनमें प्यार का छलावा हो

(*पअ*) जिनमें ग्रामीण जन-जीवन की जटिलता हो

(घ) **कवि देश की पहचान के विषय में क्या कहना चाह रहा है?**

(*प*) देश की पहचान गाँवों के जीवन की सहजता के कारण नहीं शहरी बनावटीपन के कारण है।

(*पप*) देश की पहचान शहरों के विकास के कारण है गाँवों के पिछड़ेपन के कारण नहीं है।

(iii) देश की पहचान शहरों के बनावटीपन के कारण नहीं गाँवों के जीवन की सहजता के कारण है ।

(vi) देश की पहचान सूनी ताकती आँखों के कारण नहीं पुते गालों के कारण है ।

(ट) **इस काव्यांश का उपयुक्त शीर्षक होगा** 1

(*प*) मुस्कराती मुस्कान

(*पप*) गर्वीली भवें

(*पपप*) छाया प्यार की

(*पअ*) आँखें मेरे देश की

प्रश्न 6. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उनार के सही विकल्प छाँटकर लिखिए अंक 5

''मैंने देखा
एक बड़ा बरगद का पेड़ खड़ा है
उसके नीचे कुछ छोटे-छोटे पौधे
बड़े सुशील विनम्र
देखकर मुझको यों बोले-
हम भी कितने खुशकिस्मत हैं
जो खतरों का नहीं सामना करते
आसमान से पानी बरसे, आँधी गरजे,
बिजली कड़के, आग बरसे

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

हमको कोई फिय नहीं है
एक बड़े की वरद छत्रछाया के नीचे
हम अपने दिन बिता रहे हैं
बड़े सुखी हैं।

मैंने देखा
एक बड़ा बरगद का पेड़ खड़ा है
उसके नीचे कुछ छोटे-छोटे पौधे
अंसतुष्ट औ ''रूष्ट
देखकर मुझको यों बोले
हम भी कितने बदकिस्मत हैं
जो खतरों का नहीं सामना करते
वे कैसे टपर को उठ सकते हैं
इसी बड़े की छाया ने ही
हमको बौना बना रखा
हम बड़े दु:खी हैं।''

(1) इस कविता में बरगद प्रतीक है -
(क) बूढ़े व्यक्ति का
(ख) बड़े - बुजुगोह का
(ग) पुरानी परम्पराओं का
(घ) रूढ़ियों का

(2) ' छोटे-छोटे पौधे' प्रतीक है -
(क) छोटे बच्चों का
(ख) नवजात शिशु का
(ग) नई पीढ़ी का
(घ) नई परम्पराओं का

(3) बड़े सुशील विनम्र छोटे-छोटे पौध अपने आपको खुशकिस्मत इसलिए मानते हैं क्योंकि-
(क) बरगद की विशाल छत्र-छाया में वे अपने आप को सुरक्षित महसूस करते हैं
(ख) उन्हें धूप नहीं लगती
(ग) उन्हें खतरों का सामना नहीं करना पड़ता
(घ) वे वर्षा, आँधी और तूफान का सामना नहीं करना चाहते

(4) दूसरे अंश में छोटे-छोटे पौधे असंतुष्ट और रूष्ट हैं क्योंकि-
(क) वे बरगद को अपना दुश्मन मानते हैं
(ख) वे बरगद को खतरनाक मानते हैं
(ग) उन्हें बरगद से कोई लगाव नहीं हैं
(घ) वे बरगद की छाया को अपने विकास में बाधा मानते हैं

(5) वे अपने-आपको बदकिस्मत इसलिए मानते हैं क्योंकि
(क) वे अपने छोटे स्वरूप से खुश नहीं हैं
(ख) उन्हें चुनौतियों को स्वीकार कर आगे बढ़ने का अवसर नहीं मिल रहा

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

(ग) वे आज़ादी चाहते हैं, जो उन्हें मिल नहीं रही

(घ) वे बरगद के आश्रय में रह रहे हैं

प्रश्न 7. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर के सही विकल्प छाँटकर लिखिए– अंक 5

आओ वीरोचित कर्म करो
मानव हो कुछ तो शर्म करो
यों कब तक सहते जाओगे, इस परवशता के जीवन से
विद्रोह करो, विद्रोह करो
जिसने निज स्वार्थ सदा साधा
जिसने सीमाओं में बाँधा
आओ उससे, उसकी निर्मित जगती के अणु अणु कण कण से
विद्रोह करो, विद्रोह करो
मनमानी सहना हमें नहीं
पशु बन कर रहना हमें नहीं
विधि के मत्थे पर भाग्य पटक, इय नियति की उलझन से
विद्रोह करो, विद्रोह करो
विप्लव गायन गाना होगा
सुख स्वर्ग यहाँ लाना होगा
अपने ही पौरुष के बल पर, जर्जर जीवन के क्रन्दन से
विद्रोह करो, विद्रोह करो
क्या जीवन व्यर्थ गँवाना है
कायरता पशु का बाना है
इस निरुत्साह मुर्दा दिल से, अपने तन से, अपने तन से.....

(1) मनुष्य के लिए शर्मनाक है–
(क) स्वार्थी भावनाएँ
(ख) पराधीनता का जीवन
(ग) वीरोचित कार्य
(घ) विद्रोह

(2) 'स्वार्थ साधना व सीमाओं में बाँधना' संकेत करता है–
(क) आतंकवाद की ओर
(ख) राजतंत्र की ओर
(ग) प्रजातंत्र की ओर
(घ) पंचतंत्र की ओर

(3) 'विधि के मत्थे भाग्य पटक' पंक्ति किन व्यक्तियों की ओर संकेत करती है?
(क) आशावादी
(ख) निराशावादी
(ग) भाग्य वादी

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

(घ) कर्मवादी

(4) पृथ्वी पर स्वर्ग स्थापित होगा–

(क) मनुष्य की पारस्परिक एकता से

(ख) ईश्वर के प्रति सच्ची भक्ति से

(ग) मनुष्य की विविध कल्पनाओं से

(घ) मनुष्य के परिश्रम व साहस से

(5) काव्यांश का उचित शीर्षक हो सकता है–

(क) कर्म करो

(ख) शर्म करो

(ग) विद्रोह करो

(घ) क्रांति करो

प्रश्न 8. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर के सही विकल्प छाँटकर लिखिए– अंक 5

जिस-जिससे पथ पर स्नेह मिला
उस-उस राही को धन्यवाद। जीवन अस्थिर, अनजाने ही
हो जाता पथ पर मेल कहीं
सीमित पग-डग, लंबी मंजिल
तय कर लेना कुछ खेल नहीं।
दाएँ-बाएँ सुख-दुख चलते
सम्मुख चलता पथ का प्रमाद
जिस-जिससे पथ पर स्नेह मिला
उस-उस राही को धन्यवाद।

साँसों पर अवलम्बित काया,
जब चलते-चलते चूर हुई।
दो स्नेह शब्द मिल गए,
मिली- नव स्फूर्ति, थकावट दूर हुई।
पथ के पहचाने छूट गए,
पर साथ-साथ चल रही याद।
जिस-जिससे पथ पर स्नेह मिला
उस-उस राही को धन्यवाद।

(1) कवि किसे धन्यवाद देता है?

(क) राही को।

(ख) मित्रों को।

(ग) परिवार जन को।

(घ) जीवन-मार्ग पर जिस-जिससे स्नेह मिला।

(2) जीवन-मंजिल को तय कर लेना खेल क्यों नहीं है?

(क) समय का अभाव।

(ख) लघु जीवन।

(ग) सीमित पग-डग।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

(घ) निर्धनता।

(3) कवि की 'थकावट' कब दूर हुई?

(क) जब स्नेह के दो शब्द मिले।

(ख) जब आराम मिला।

(ग) जब साथ मिला।

(घ) जब वह प्रसन्न हुआ।

(4) हमेशा हमारे साथ क्या रहता है?

(क) साथियों का साथ।

(ख) साथियों की यादें।

(ग) साथियों का स्नेह।

(घ) साथियों की मित्रता।

(5) 'अवलम्बित' शब्द का अर्थ है-

(क) विलम्ब।

(ख) परतंत्र।

(ग) आश्रित।

(घ) सहयोग।

प्रश्न 9. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर के सही विकल्प छाँटकर लिखिए–** अंक 5

ओ नए साल, कर कुछ कमाल, जाने वाले को जाने दे,
दिल से अभिनंदन करते हैं, कुछ नई उमंगें आने दे।
आने जाने से क्या डरना, ये मौसम आते जाते हैं,
तन झुलसे शिखर दुपहरी में कभी बादल भी छा जाते हैं।
इक वह मौसम भी आता है, जब पत्ते भी गिर जाते हैं,
हर मौसम को मनमीत बना, नवगीत खुशी के गाने दे।

जो भूल हुई जा भूल उसे, अब आगे भूल सुधार तो कर,
बदले में प्यार मिलेगा भी, पहले औरों से प्यार तो कर,
फूटेंगे प्यार के अंकुर भी, वह जमीं ज़रा तैयार तो कर,
भले जीत का जश्न मना, पर हार को भी स्वीकार तो कर,
मत नफ़रत के शोले भड़का, बस गीत प्यार के गाने दे।

इस दुनिया में लाखों आए और आकर चले गए,
कुछ मालिक बनकर बैठ गए, कुछ माल पचाकर चले गए,
कुछ किलों के अंदर बंद रहे, कुल किले बनाकर चले गए,
लेकिन कुछ ऐसे भी आए, जो शीश चढ़ाकर चले गए,
उन वीरों के पद-चिह्नों पर, अब 'साथी' सुमन चढ़ाने दे।

(क) **कवि नए साल से क्या कामना कर रहे हैं ?**

(*i*) स्वस्थ बने रहने की

(*ii*) नई उमंगों के आगमन की

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

(*iii*) सुख व समृद्धि की

(*iv*) लंबी आयु की

(ख) **मौसम के आने-जाने से अभिप्राय है–**

(*i*) क्रमशः ऋतुओं का आवागमन

(*ii*) अतिथियों का आवागमन

(*iii*) पशु-पक्षियों का आवागमन

(*iv*) सुखों व दुखों का आवागमन

(ग) **''भले जीत का जश्न मना.....'पंक्ति में कवि क्या प्रेरणा दे रहे हैं?**

(*i*) सफलता-असफलता को समान भाव से स्वीकारने की

(*ii*) सफलता में स्वयं को भूल जाने की

(*iii*) असफलता में हताश हो जाने की

(*iv*) परिस्थितियों के अनुसार कर्म करने की

(घ) **'जो शीश चढ़ाकर चले गए'–पंक्ति किनकी ओर संकेत कर रही है?**

(*i*) ईश्वर भक्तों की ओर

(*ii*) शहीदों की ओर

(*iii*) देशवासियों की ओर

(*iv*) तपस्वियों की ओर

(ङ) **दुनिया में कैसे-कैसे लोग आए और चले गए ?**

(*i*) मालिक बनने वाले

(*ii*) किले में रहने वाले

(*iii*) किले बनाने वाले

(*iv*) उपर्युक्त सभी

प्रश्न 10. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर के सही विकल्प छाँटकर लिखिए– अंक 5

''सच हम नहीं, सच तुम नहीं
सच है महज़ संघर्ष ही
संघर्ष से हटकर जिए तो क्या जिए हम या कि तुम।
जो नत हुआ वह मृत हुआ ज्यों वृंत से झर कर कुसुम।
जो लक्ष्य भूल रूका नहीं।
जो हार देख झुका नहीं।
जिसने प्रणय पाथेय माना जीत उसकी ही रही।
सच हम नहीं, सच तुम नहीं।
ऐसा करो जिससे न प्राणों में कही जड़ता रहे।
जो है जहाँ चुपचाप अपने-आप से लड़ता रहे।
जो भी परिस्थितियाँ मिलें

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

काँटे चुभें, कलियाँ खिलें।
हारे नहीं इंसान, संदेश जीवन का यही।

(1) काव्यांश के आधार पर सच का अर्थ है–
(क) सत्य के मार्ग पर चलना
(ख) लक्ष्य को केन्द्र बनाए रखना
(ग) जीवन में निरन्तर संघर्ष करना
(घ) हार न मानना

(2) 'जो है जहाँ चुपचाप अपने-आपसे लड़ता रहे'- पंक्ति में अपने-आपसे लड़ने का अभिप्राय–
(क) खुद से लड़ाई लड़ना
(ख) सबसे छुपकर लड़ना
(ग) अपनों से निरंतर संघर्ष कर आगे बढ़ना
(घ) विपरीत स्थितियों को अनुकूल बनाने के लिए निरन्तर संघर्षरत रहना

(3) 'काँटे' और 'कलियाँ' प्रतीक हैं–
(क) मित्र और शत्रु के
(ख) जीवन में मिलने वाले दु:ख-सुख के
(ग) प्रकृति के
(घ) विपरीत स्थितियों के

(4) 'जो नत हुआ वह मृत हुआ ज्यों वृंत से झर कर कुसुम' में प्रयुक्त अलंकार–
(क) अतिश्योक्ति अलंकार
(ख) उत्प्रेक्षा अलंकार
(ग) उपमा अलंकार
(घ) रूपक अलंकार

(5) काव्यांश में प्रयुक्त शब्द 'अपने-आप में' सर्वनाम का निम्नलिखित में से कौन सा भेद है–
(क) पुरूषवाचक सर्वनाम
(ख) प्रश्नवाचक सर्वनाम
(ग) निश्चयवाचक सर्वनाम
(घ) निजवाचक सर्वनाम

****

उत्तरमाला

उत्तर

प्रश्न 1. $1 \times 5 = 5$

(*i*) ग
(*ii*) क
(*iii*) ख
(*iv*) घ
(*v*) ख

उत्तर

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

प्रश्न 2. $1 \times 5 = 5$

(*i*) ग
(*ii*) ख
(*iii*) ग
(*iv*) क
(*v*) ख

उत्तर

प्रश्न 3. $1 \times 5 = 5$

(क)	(*iii*)	1
(ख)	(*iv*)	1
(ग)	(*ii*)	1
(घ)	(*i*)	1
(ङ)	(*iv*)	1

उत्तर

प्रश्न 4. $1 \times 5 = 5$

(क)	(*iii*)	1
(ख)	(*ii*)	1
(ग)	(*iv*)	1
(घ)	(*iv*)	1
(ङ)	(*iv*)	1

उत्तर

प्रश्न 5. $1 \times 5 = 5$

(क)	(*iii*)	1
(ख)	(*iv*)	1
(ग)	(*ii*)	1
(घ)	(*iii*)	1
(ङ)	(*iv*)	1

www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com